

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये अष्टसप्ततितमं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে অষ্টসপ্ততিতমং দশকম্ ॥

রুক্ষিণীস্বয়ংররম্

ত্রিদশরর্ধকিরর্ধিতকৌশলং

ত্রিদশদত্তসমস্তরিভূতিমৎ।

জলধিমধ্যগতং ঞরমভূষযো

নরপুরং রপুরঞ্চিতরোচিষা ॥ 78.1 ॥

দদুষি রেরতভূভূতি রেরতীং

হলভূতে তনযাং রিধিশাসনাৎ।

মহিতমুৎসরঘোষমপুপুষঃ

সমুদিতৈর্মুদিতৈঃ সহ যাদরৈঃ ॥ 78.2 ॥

অথ রিদর্ভসুতাং খলু রুক্ষিণীং

প্রণযিনীং ঞরযি দের সহোদরঃ।

স্বযমদিৎসত চেদিমহীভুজে

স্বতমসা তমসাধুমুপাশ্রযন্ ॥ 78.3 ॥

চিরধৃতপ্রণযা ঞরযি বালিকা

সপদি কাঙ্ক্ষিতভঙ্গসমাকুলা।

তর নিরেদযিতুং দ্বিজমাদিশৎ

স্বকদনং কদনঙ্গরিনির্মিতম্ ॥ 78.4 ॥

দ্বিজসুতোহপি চ তুর্ণমুপাযযৌ

তর পুরং হি দুরাশদুরাসদম্।

मुदमराप च सादरपूजितः

स भरता भरतापहता स्वयम् ॥ 78.5 ॥

स च भरन्तमरोचत कुण्डिने

नृपसुता खलु राजति रुक्मिणी।

एरुषि समुत्सुकया निजधीरता -

रहितया हि तया प्रहितोहस्यहम् ॥ 78.6 ॥

तर हताहस्यि पुरैर गुणैरहं

हरति मां किल चेदिनूपोहधुना।

अयि कृपालय पालय मामिति

प्रजगदे जगदेकपते तया ॥ 78.7 ॥

अशरणां यदि मां एरमुपेक्षसे

सपदि जीरितमेर जहाम्यहम्।

इति गिरा सुतनोरतनोद्धुशं

सुहृदयं हृदयं तर कातरम् ॥ 78.8 ॥

अकथयञ्जुमथैनमये सथे

तदधिका मम मन्मथरेदना।

नृपसमक्षमुपेत्य हराम्यहं

तदयि तां दयितामसितेक्षणाम् ॥ 78.9 ॥

प्रमुदितेन च तेन समं तदा

रथगतो लघु कुण्डिनमेधिरान्।

गुरुमरुत्पुरनायक मे भरान्

रितनुतां तनुतामखिलापदाम् ॥ 78.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये अष्टसप्ततितमं दशकं समाप्तम् ॥